बहू की विदा

लेखक परिचय :

विनोद रस्तोगी

विनोद रस्तोगी का जन्म 12 मई सन् 1922 ई. को उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में शमसाबाद ग्राम में हुआ था। आपकी शिक्षा शमसाबाद, फर्रुखाबाद और कन्नौज में हुई। हिन्दी विषय में एम0ए0 करने के बाद आप आकाशवाणी के इलाहाबाद केन्द्र में नाट्यनिर्देशक के पद पर कार्य करने लगे।

अब तक आपके आठ उपन्यास और दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। ''आजादी के बाद, बर्फ की मीनार, गोपा का दान, फिसलन और पाँव, भगीरथ के बेटे'' आपके प्रकाशित नाटक हैं।

आपकी रचनाओं की भावभूमि सामाजिक है। उसमें आधुनिक युग के बदलते परिवेश के संघात से उत्पन्न बौद्धिक चेतना का स्वर प्रबल है। नए सामाजिक और नैतिक मूल्य आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न प्रेम समस्या, तिलक-दहेज, रूढ़ियों जैसे विषयों पर सुंदर एकांकी उनकी भाव-भूमि है। इन एकांकियों में वस्तु-योजना, वातावरण, पात्र सभी का संयोजन संतुलित है।

विनोद रस्तोगी आधुनिक एकांकीकारों में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। सामाजिक जीवन की अनेक समस्याओं को वे अपने एकांकियों की विषय-वस्तु बनाते हैं। आधुनिक जीवन की मानसिक कुण्ठाओं को भी उन्होंने अपने एकांकियों में स्थान दिया है। अनेक रेडियो रूपकों के लेखक विनोद रस्तोगी के एकांकी अपनी शैली में सहज संप्रेषणीय हैं।

आधुनिक हिन्दी एकांकीकारों में रस्तोगी जी का विशिष्ट स्थान है।

प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार ने अपने समाज में व्याप्त दहेज की समस्या की ओर संकेत करते हुए स्पष्ट किया है कि यह समस्या हमारे सामाजिक जीवन को तहस-नहस कर रही है। इस एकांकी में एक धनी व्यापारी जीवनलाल अपनी बहू को रक्षाबंधन के अवसर पर इसलिए उसके मायके भेजने से अस्वीकार कर देता है कि बहू के मायके वालों ने उनकी दहेज की माँग पूरी नहीं की थी। मायके से आए बहू के भाई को वे खरी-खोटी भी सुनाते हैं और अपनी बेटी को स्वयं के द्वारा दिए गए दहेज की चर्चा आत्म-प्रशंसा के रूप में करते हैं। जीवनलाल की पत्नी अपनी बहू के प्रति आत्मीय भाव रखती है। जीवनलाल का पुत्र भी उनकी पुत्री को लेने उसकी ससुराल गया हुआ है। पुत्री की ससुराल वाले भी जीवनलाल की पुत्री को मायके नहीं भेजते हैं। वे भी उससे दहेज की माँग रखते हैं और उनका बेटा बहिन के बगैर ही घर लौट आता है। जीवनलाल का हृदय परिवर्तन होता है। अंततः वह बहू की विदा प्रसन्नतापूर्वक करते हैं।

इस एकांकी में जीवनलाल दहेज-लोभी व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत होते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि जैसा व्यवहार वे अपनी बहू के मायके वालों के प्रति कर रहे हैं वैसा व्यवहार उनकी पुत्री के ससुराल वाले भी उनके प्रति कर सकते हैं। जब उनके समक्ष इस तरह का प्रसंग उपस्थित होता है तब वे अपनी सोच में परिवर्तन करते हैं। उनकी पत्नी सहृदय महिला हैं। वे अपनी बहू के दर्द को जानती हैं। उन्हें पता है कि रक्षाबंधन के अवसर पर बहू को अपने भाइयों के बीच ही होना चाहिए। इसलिए वे बहू को मायके जाने की अनुमति देती है। बहू के रूप में कमला सुशील और शांत महिला है। वह अपनी पीड़ा को पी जाना चाहती है। एकांकीकार ने इस तरह की चरित्र-सृष्टि के माध्यम से दहेज के सामाजिक और मानसिक संतापों का उल्लेख किया है।

हमारे समाज में व्याप्त दहेज-प्रथा एक अभिशाप है। इसी अभिशाप को रेखांकित करता हुआ यह एकांकी मानवीय-भावना के परिवर्तन से इस समस्या का समाधान तलाशता है।

पात्र-परिचय

जीवनलाल – एक धनी व्यापारी, अवस्था पचास वर्ष।

राजेश्वरी – जीवनलाल की पत्नी, अवस्था छियालीस वर्ष।

रमेश – जीवनलाल का पुत्र, अवस्था बाईस वर्ष।

कमला – रमेश की पत्नी, अवस्था उन्नीस वर्ष।

प्रमोद – कमला का भाई, अवस्था तेइस वर्ष।

(कमरा आधुनिक ढंग से सजा है। सामने की ओर बाएँ कोने में रेडियो और दाएँ कोने में पुस्तकों का रैक है। कमरे के बीच में सोफा-सैट है। छोटी गोलमेज पर सुन्दर फूलदान रखा है।

कमरे में दो द्वार हैं। सामने वाला द्वार अन्दर जाने के लिए है और बाईं ओर का द्वार बाहरी बरामदे में खुलता है। दोनों पर पर्दे पड़े हैं। दाईं ओर खिड़की है जो खुली हुई है।

पर्दा उठने पर जीवनलाल खिड़की के समीप खड़े हुए दिखाई पड़ते हैं। वे बाहर की ओर देख रहे हैं। आँखों पर चश्मा हैं। भरे हुए चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछे हैं सिर गंजा है। धोती-कुर्ता पहने हैं। मुख पर गंभीरता और समृद्धि के चिह्न है।

उससे कुछ दूर हटकर ही प्रमोद विनम्र भाव से खड़ा है। वह पेंट और बुशर्ट पहने है। चेहरे पर निराशाजनक/करुणा भाव है।)

प्रमोद : (आगे बढ़कर धीमे स्वर में) क्या निर्णय किया आपने?

जीवनलाल : विदा नहीं होगी।

प्रमोद : लेकिन जरा सोचिए तो। यदि आपने विदा नहीं की तो बहन की क्या दशा होगी!

जीवनलाल : मैंने उसकी दशा का ठेका नहीं लिया है!

प्रमोद : हर लड़की पहला सावन अपनी सखी सहेलियों के साथ हँस-खेलकर बिताने का सपना देखती है।

जीवनलाल : जानता हूँ।

(जीवनलाल सोफे पर बैठकर जमुहाई लेते हैं, मानो प्रमोद की बातों से ऊब रहे हो।)

प्रमोद : यह जानकर भी ...

जीवनलाल : अपना निर्णय सुना चुका हूँ। विदा नहीं होगी।

प्रमोद : यदि मैं कमला को बिना लिए ही गया तो माँ का हृदय टूट जायेगा।

जीवनलाल : मैं मजबूर हूँ। अगर माँ-बहन का इतना ही ख्याल था तो दहेज पूरा क्यों नहीं दिया?

प्रमोद : (दीन स्वर में) अपनी सामर्थ्य के अनुसार जितना भी हो सका हमने दे दिया। फिर भी अगर....

जीवनलाल : (कड़े स्वर में) अगर तुम्हारी सामर्थ्य कम थी तो अपनी बराबरी का घर देखते। झोपड़ी में रहकर महल से नाता क्यों जोड़ा?

प्रमोद : (हाथ जोड़कर) जी....

जीवनलाल : (उठकर आवेश में टहलते हुए) देना तो दूर, बारात की खातिर भी ठीक से नहीं की गयी। मेरे नाम

पर जो धब्बा लगा, मेरी शान को जो ठेस पहुँची, भरी बिरादरी में जो हँसी हुई, उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है। जाओ, कह देना अपनी माँ से कि अगर बेटी विदा कराना चाहती है तो पहले उस घाव के लिए मरहम भेजें।

प्रमोद : जी... आप इस समय तो विदा कर दें। हम गौने में आपकी हर माँग को पूरी करने की चेष्टा करेंगे।

जीवनलाल : मैंने दुनिया देखी है, प्रमोद! ये बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं। और तुम.... (उत्तेजित स्वर में) कल के छोकरे मुझे बेवकूफ बनाना चाहते हो।

प्रमोद : यह आप क्या कह रहे हैं?

जीवनलाल : ठीक कह रहा हूँ। मेरा फैसला आखिरी है। विदा तभी होगी जब पाँच हजार नगद (दायाँ हाथ फैलाकर) इस हाथ पर रख दोगे।

प्रमोद : (आवेश में) यह तो सरासर अन्याय है, शिकायत आपको हम से है। उस भोली-भाली लड़की ने आपका क्या बिगाड़ा है। जो विदा न करके आप उससे बदला ले रहे हैं? अगर रमेश बाबू होते...

जीवनलाल : तो वह क्या कर लेता? मेरे सामने मुँह खोलने की हिम्मत नहीं है उसमें। वह मेरा बेटा है। तुम्हारी तरह बड़ों के मुँह लगने की बदतमीजी करने वाला कोई आवारा छोकरा नहीं।

प्रमोद : (अपमान से तिलमिलाकर) बाबूजी? बेटीवाला समझकर ही आप मेरा अपमान कर रहे हैं। किन्तु.... किन्तु यह न भूलिए कि आप भी बेटी वाले हैं।

जीवनलाल : हाँ, हम भी बेटी वाले हैं! लेकिन तुम्हारी तरह नहीं। पिछले महीने हमने अपनी गौरी की शादी की है। वह खातिरदारी की कि बारात वाले दंग रह गए। इतना दहेज दिया कि देखने वालों ने दाँतों तले अँगुली दवा ली। (दर्द-मिश्रित आवेश) तुम मेरी बराबरी करोगे? हाँ.... बेटी वाले.... ! बेटी वाले होकर हमारी मूँछ ऊँची है। समझे!

प्रमोद : जी....

जीवनलाल : रमेश गया है गौरी को विदा कराने। (कलाई पर बँधी घड़ी देखकर) कुछ देर में उसे लेकर आता ही होगा। मेरी बेटी पहला सावन यहाँ बिताएगी। तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे और उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा। समझे...।

प्रमोद : (व्यंग्य से) जो हमारी बहन है क्या वह आपकी कोई नहीं है?

जीवनलाल : (तेजी से) बेटी और बहू को एक तराजू पर तौलना चाहते हो? बेटी-बेटी है और बहू, बहू।

प्रमोद : ठीक है। जब आप अपनी ज़िद पर अड़े हैं तो विनती करना व्यर्थ है। (रुककर धीमे स्वर में) क्या जाने से पहले एक बार बहन से मिल सकता हूँ।

जीवनलाल : जरूर। और हाँ, उसे यह भी बताते जाना कि अगली बार मेरे लिए मरहम लेकर विदा कराने कब आओगे। (ऊँचे स्वर में)अरे, सुनती हो, गौरी की माँ। जरा बहू को भेज दो। अपने भाई से मिल ले आकर। (सहज स्वर में) मैं तब तक देखूँ कि माली के बच्चे ने झूला डाला या नहीं? (द्वार की ओर बढ़ते हैं: द्वार का पर्दा हटाकर मुड़ते हुए) गौरी के लिए झूला डाल रहा हूँ, लान में।

(जीवनलाल का प्रस्थान। प्रमोद थका-सा सोफे पर बैठ जाता है। अन्दर से कमला आती है। चाँद से सुन्दर मुखड़े पर उदासी की घटा है। हाथों में लाल चूड़ियाँ है। रेशमी साड़ी-ब्लाउज पहने है।

प्रमोद के पास जाकर चुपचाप खड़ी हो जाती है- सिर नीचा किए है।)

प्रमोद : (भारी स्वर में) बैठ जाओ कमला।

(कमला पास ही बैठ जाती है)

प्रमोद : अच्छी तरह से तो हो?

(कमला सिसकने लगती है।)

प्रमोद : (आर्त्त स्वर में) पागल न बनो, कमला रोओ मत, मैं कहता हूँ रोओ मत। इन मोतियों का मूल्य समझने वाला यहाँ कोई नहीं है। पानी में पत्थर नहीं पिघल सकता।

कमला : (सिसकती हुई) भइया। क्या....

प्रमोद : घबराओ मत। मैं जल्दी ही फिर आऊँगा और उस बार विदा अवश्य होगी, क्योंकि मैं चोट का मरहम लेकर आऊँगा।

कमला : (न समझने के ढंग से) मरहम... ?

प्रमोद : हाँ, कमला? हमारे व्यवहार से बाबू जी के कलेजे में घाव हो गया है। उन्हें मरहम चाहिए और उस मरहम की कीमत है पाँच हजार रुपये। (कमला चौंककर भाई की ओर देखती है।)

प्रमोद : तुम चिंता न करो, कमला मरहम का प्रबंध हो जाएगा। इस गिरे हाल में भी मकान सात-आठ हजार में बिक ही जाएगा।

कमला : (व्याकुलता पूर्ण आग्रह से) मेरी विदा के लिए घर न बेचना, भइया आपको मेरे सुख-सुहाग की सौगंध है।

प्रमोद : यह क्या कह रही हो तुम? क्या तुम नहीं चाहती कि पहला सावन सखी सहेली के साथ माँ के घर बिताओ?

कमला : किस लड़की की यह कामना नहीं होगी, भैया? लेकिन... लेकिन उस कामना की पूर्ति के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकाना कहाँ तक ठीक है...? साल-दो साल में विमला का ब्याह भी आपको करना है। आवेश में आकर....

प्रमोद : (बीच में ही) लेकिन तुम.....

कमला : मेरी चिंता आप न करें। सच, विदा न होने से मुझे जरा भी दुःख न होगा।

प्रमोद : कमला...।

कमला : गौरी आ रही है। बहुत अच्छा स्वभाव है उसका। हर समय हँसती-ही रहती है। उसके साथ रहकर मुझे सखी सहेलियों की कमी बिल्कुल नहीं अखरेगी। आप विश्वास करें, भैया।

प्रमोद : लेकिन आज नहीं तो कल रुपया तो देना ही पड़ेगा, कमला कागज के दो टुकड़ों पर अपना स्नेह और प्यार बेचने वालों के बीच तुम इस तरह कब तक रह सकोगी।

कमला : धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा, भैया। माँ जी ममता की मूर्ति हैं ही, बाबूजी जरा जिद्दी स्वभाव के हैं। समय के साथ वे भी सब भूल जाएँगे।

प्रमोद : मुझे तो ऐसा नहीं लगता। सब एक ही धातु के बने हैं। हो सकता है, माँ जी की ममता सिर्फ दिखावा हो।

(अंदर से राजेश्वरी का प्रवेश। गोरा रंग, स्वस्थ शरीर। सफेद साड़ी और ब्लाउज पहने है।)

राजेश्वरी : कैसा दिखावा, भैया?

(प्रमोद चौक पड़ता है। कमला और प्रमोद उठने का उपक्रम करते हैं।)

राजेश्वरी : (दूसरे कोच पर बैठती हुई) बैठे रहे तुम लोग। (हँसकर) क्या बात हो रही थी, भाई-बहन में?

प्रमोद : बस, कुशल क्षेम पूछ रहा था।

राजेश्वरी : हाँ, विदा के लिए क्या कहा उन्होंने....?

(प्रमोद मौन रहता है। कमला दृष्टि नीची कर लेती है।)

राजेश्वरी : समझ गई, अपनी जिद के आगे तो वे किसी की सुनते ही नहीं। जब तुम्हारी चिट्ठी आई थी तभी मना कर रहे थे। मैं तो समझाते-समझाते हार गई। क्या कहा उन्होंने?

(प्रमोद अब भी मौन है।)

राजेश्वरी : मुझसे शर्म कैसी...? मेरे लिए जैसा रमेश वैसे ही तुम। बोलो, कितना रुपया चाहते हैं वे?

प्रमोद : जी.... जी..... रुपये की तो कोई बात नहीं हुई। वे तो.....

राजेश्वरी : (बीच में ही) माँ से झूठ बोलते हो। मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूँ इंसान से ज्यादा प्यारा उन्हें पैसा है।

प्रमोद : जी.... आप.....

राजेश्वरी : (प्रमोद की ओर गूढ़ दृष्टि से देखती हुई) बोली, कितना रुपया लेकर वे विदा करने को तैयार हैं? चुप क्यों हो? बताओ।

प्रमोद : (धीमे और उदास स्वर में) पाँच हजार।

राजेश्वरी : बस! मैं देती हूँ तुम्हें रुपये। उनके मुँह पर मारकर कहना कि यह लो कागज के रंगे-बिरंगे टुकड़े जिन्हें तुम आदमी से ज्यादा प्यार करते हो। (उठकर सामने वाले द्वार की ओर बढ़ती हुई) मैं अभी लाती हूँ।

प्रमोद : (उठकर) ठहरिए माँजी।

(राजेश्वरी रुक जाती है और मुड़कर प्रमोद की ओर देखती है।)

प्रमोद : मुझे रुपये नहीं चाहिए मैं बिना विदा कराए जा रहा हूँ।

कमला : (कमला उसी प्रकार मूर्तिवत बैठी है।)

राजेश्वरी : (लौटती हुई) यह क्या कर रहे हो, बेटा? मेरे रहते विदा न हो यह कभी नहीं हो सकता। मैं माँ हूँ, माँ के दिल को समझती हूँ (भारी स्वर में) जिस तरह उतावली होकर मैं गौरी की राह देख रही हूँ उसी तरह तुम्हारी माँ कमला की राह देख रही होगी। नहीं विदा जरूर होगी। तुम अकेले नहीं जाओगे। (कमर से कुंजियों का गुच्छा निकालकर कमला की ओर बढ़ती हुई) जा बेटी तिजोरी से

रुपये निकाल ला।

(कमला गुच्छा लेने के लिए हाथ आगे नहीं बढ़ाती। प्रमोद खिड़की की ओर मंद गति से बढ़ता है।)

राजेश्वरी : जाती क्यों नहीं (गुच्छा कमला के हाथ में थमाती हुई) जल्दी कर।

(कमला उठकर माँजी कहती है और फिर सिसकने लगती है। राजेश्वरी 'मेरी बेटी' कहकर उसे हृदय से लगा लेती है। प्रमोद खिड़की के बाहर की ओर देखने लगता है।)

जीवनलाल : (बाहर से) अरे! सुनती हो गौरी के आने का समय हो गया तुमने स्वागत की कोई तैयारी नहीं की।

राजेश्वरी : (कमला से) जा बेटी तू अंदर जा।

(कमला अंदर जाती है प्रमोद मुड़कर बाहर वाले द्वार की ओर देखता है जिधर से जीवनलाल आते है।)

जीवनलाल : अरे! तुम यहाँ खड़ी हो? जाकर तैयारी करो स्वागत की, जरा यह भी तो देख ले कि नाक वाले अपनी बेटी का स्वागत कैसे करते हैं ?

राजेश्वरी : (चिढ़कर) कभी सीधी बात नहीं निकलती मुँह से? जब देखो तब बेढंगी बातें।

जीवनलाल : यह लो इसमें कौन-सी उलटी बात है?

राजेश्वरी : तुम समझते हो कि दुनिया में एक तुम ही नाक वाले हो, और सब नकटे हैं।

जीवनलाल : तुम्हें तो मेरी हर बात में बुराई ही दिखाई देती है। प्रमोद तुम ही बताओ, मैंने कोई बात कही है।

प्रमोद : (धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ) ठीक ही कहा आपने, आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है। जिनके पास पैसा नहीं वह नाक मूँछ होते हुए भी नकटा है, मूँछ कटा है। (नेपथ्य से हार्न का स्वर)

जीवनलाल : (प्रसन्न स्वर में) आ गई मेरी गोरी राजेश्वरी अरे! खड़ी-खड़ी मेरा मुँह क्या देख रही हो अंदर से मिठाई का थाल लाओ (राजेश्वरी उसी प्रकार खड़ी रहती है। उसकी दृष्टि बाहर वाले द्वार की ओर है। प्रमोद भी उसी ओर देख रहा है अंदर वाले द्वार के पर्दे की ओट में कमला खड़ी है। बाहर से उसका हाथ दिखाई पड़ रहा है। जीवनलाल बड़े उत्साह से द्वार की ओर बढ़ते हैं तभी बाहर से रमेश आता है। इकहरे बदन का सुन्दर नवयुवक है वह पेंट और कमीज पहने है। हाथ में बरसाती कोट है। चेहरे पर उदासी के चिह्न है। बरसाती कोट कोच पर रखकर चुपचाप खड़ा हो जाता है।)

जीवनलाल : (बाहर वाले द्वार का पर्दा हटाकर) बाहर झाँकने के बाद घबराए हुए स्वर में गौरी कहाँ है?

रमेश : (धीमे स्वर में) वह नहीं आई।

जीवनलाल : नहीं आई। क्यों तबीयत तो ठीक है?

रमेश : जी हाँ।

जीवनलाल : फिर?

रमेश : उन्होंने विदा नहीं की।

(राजेश्वरी हतप्रभ सी कोच पर बैठ जाती है। कमला के हाथ में कंपन होता है जिससे पर्दा भी

हिल जाता है। प्रमोद बड़े ध्यान से जीवनलाल की ओर देख रहा है।)

जीवनलाल : (जैसे किसी ने छाती पर घूँसा मार दिया हो।) विदा नहीं की! क्यों नहीं की विदा?

रमेश : कह रहे थे दहेज पूरा नहीं दिया गया।

जीवनलाल : (बिगड़कर) हमने जीवन भर की कमाई दे दी है और उनकी नजर में दहेज पूरा नहीं दिया गया। लोभी कहीं के।

राजेश्वरी : (उठकर) उन्हें क्यों भला बुरा कह रहे हो। बेटी वाले चाहे अपना घरद्वार बेचकर दे दें पर बेटे वालों की नाक भौंह सिकुड़ी ही रहती है।

जीवनलाल : मगर शराफत और इन्सानियत....

राजेश्वरी : (बीच में ही) अब शराफत और इन्सानियत की दुहाई देते हो। कुछ देर पहले तो।

जीवनलाल : चुप रहो तुम!

राजेश्वरी : बहुत चुप रही! अब नहीं रहूँगी। आखिर क्या कमी है बहू के दहेज में मगर तुम हो कि...

जीवनलाल : (अनसुनी करके) मेरी बेटी की विदा न करके उन्होंने मेरा अपमान किया है। मैं.... मैं....।

राजेश्वरी : तुम भी तो किसी बेटी की विदा न करके अपमान कर रहे हो किसी का।

जीवनलाल : (चीखकर) गौरी की माँ।

राजेश्वरी : अब भी आँखें नहीं खुली? जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो वही दूसरों की बेटी को जब तक बहू और बेटी को एक-सा नहीं समझोगे तो न तुम्हें सुख मिलेगा और न ही शांति।

(जीवनलाल बैचेनी से इधर-उधर टहलते हैं वे हाथ मल रहे) फिर सिर नीचे झुका है प्रमोद रमेश के पास जाकर खड़ा हो जाता है।

जीवनलाल : बहू और बेटी, बेटी और बहू अजीब उलझन है। कुछ समझ में नहीं आता।

राजेश्वरी : अगर हर बेटे वाला यह याद रखे कि वह बेटी वाला भी है तो सब उलझनें सुलझ जाएँ।

जीवनलाल : (रुककर पत्नी की ओर देखते हुए) ....शायद तुम ठीक कहती हो।

प्रमोद : (आगे बढ़कर धीमे स्वर में) अब मुझे बाबूजी आज्ञा दीजिए।

जीवनलाल : (चौंककर) ए....।

प्रमोद : मेरी गाड़ी का समय हो रहा है। मैं जा रहा हूँ। (द्वार तक आता है फिर घूमकर) मैं जल्दी ही आऊँगा। विश्वास रखे इस बार आपकी चोट के लिए मरहम लाना भूलूँगा नहीं।

जीवनलाल : (दुखी स्वर में) ठहरो, प्रमोद! मुझे और लज्जित न करो! बेटा मेरी चोट का इलाज बेटी की ससुराल वालों ने दूसरी चोट से कर दिया है।

प्रमोद : (लौटता हुआ आश्चर्य से) बाबू जी.....।

जीवनलाल : (निःश्वास छोड़कर) कभी-कभी चोट भी मरहम का काम कर जाती है बेटा (राजेश्वरी की ओर

मुड़कर) अरे खड़ी-खड़ी हमारा मुँह क्या ताक रही हो, अंदर जाकर तैयारी क्यों नहीं करती। बहू विदा नहीं करनी है क्या....?

(कमला का हाथ पर्दे की ओट में हो जाता है। वह हर्ष के आँसू पोंछती हुई शीघ्रता से अंदर जाती है। रमेश और प्रमोद मुस्कुरा कर एक दूसरे की ओर देखते है। जीवनलाल मंदगति से आगे की ओर बढ़ते है और तभी धीरे-धीरे यवनिका गिरती है।)

अभ्यास

बोध प्रश्न

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. 'बहू की विदा' एकांकी किस समस्या पर आधारित है ?
2. प्रमोद अपनी बहन की विदा क्यों कराना चाहता था ?
3. जीवनलाल ने कमला की विदा करने से क्यों मना कर दिया ?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. 'बेटी वाले होकर हमारी मूँछे ऊँची हैं' इस कथन का क्या अभिप्राय है ?
2. प्रमोद अपना घर क्यों बेचना चाहता था ?
3. राजेश्वरी ने बहू की विदा करवाने के लिए क्या उपाय किया ?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. 'बहू की विदा' एकांकी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
2. जीवनलाल का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
3. किस घटना ने जीवनलाल का हृदय परिवर्तित कर दिया? स्पष्ट कीजिए ।
4. राजेश्वरी के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए –

दरद, हां, बिनति, व्यरथ, किमत, सूहाग, भय्या, आंचल।

2. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए-

ख्याल, बेवकूफ, ज्यादा, तबियत, नजर, शराफत, इंसानियत, जिद, खून।

3. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये-

हृदय टूटना, नाक-भौं सिकोड़ना, ठेस पहुँचाना, दाँतों तले उंगली दबाना, राह देखना, नाक वाले होना, बाल धूप में सफेद होना, झोंपड़ी में रहकर महलों से नाता जोड़ना, मूँछ ऊँची होना।

ध्यान से पढ़िए -

एक बार मोहन इन्दौर गया। वहाँ वह सड़क पर धीरे-धीरे चल रहा था, तभी उसे पीछे से सुनो-सुनो की परिचित आवाज़ सुनाई दी। जब उसने मुड़कर देखा तो उसे भोला-भाला सतीश पास आता दिखाई दिया। इस भीड़-भाड़ वाले शहर में अचानक बहुत दिन का बिछुड़ा मित्र मिल जाने पर वह बहुत प्रसन्न हुआ। भाग-दौड़ भरे वातावरण से वह दोनों एक चाय की दुकान पर गए। वहाँ उन्होंने चाय-वाय ली तथा बीते दिनों की गप-शप करते हुए शहर में घूमने निकल पड़े।

इस अनुच्छेद में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिये। धीरे-धीरे, सुनो-सुनो - पूर्ण पुनरुक्त शब्द हैं भीड़-भाड़, भोला-भाला, भाग-दौड़, गप-शप, अपूर्ण पुनरुक्त और चाय-वाय - प्रतिध्वन्यात्मक शब्द हैं।

आइये जानें :-

हिन्दी भाषा में साहित्यिक और व्यावहारिक दृष्टि से कुछ शब्दों का जोड़ी के रूप में प्रयोग होता है। ये जोड़े सामान्यत: निरर्थक शब्दों के भी होते हैं, और विपरीत अर्थ वाले भी। कभी सार्थक-निरर्थक का साथ-साथ प्रयोग होता तो कभी अपूर्ण पुनरुक्ति शब्द प्रयुक्त होते हैं। इन शब्दों के प्रयोग से कथन में प्रखरता और विचारों में स्पष्टता आ जाती है। भाषा प्रभावी बन जाती है। इस प्रकार के पुनरुक्त शब्द निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं :-

पूर्ण पुनरुक्त शब्द : जहाँ शब्द युग्म में पहली इकाई दूसरी इकाई के रूप में प्रयुक्त/पुनरुक्त होती है।
यथा - धीरे-धीरे, सुनो-सुनो

अपूर्ण पुनरुक्त शब्द :- जहाँ शब्द युग्म में दूसरी इकाई पहली इकाई से बनाकर रूप धारण कर प्रयुक्त होती है। **यथा - भीड़-भाड़, भोला-भाला**

प्रतिध्वन्यात्मक शब्द :- इसमें दूसरा शब्द पहले शब्द की प्रतिध्वनि होता है।
यथा - चाय-वाय, रोटी-सोटी

भिन्नार्थक शब्द :- इस प्रकार के शब्द युग्म में प्रत्येक शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ रखने वाला होता है।
यथा -भला-बुरा, एक-दो, पढ़ाई-लिखाई।

4. निम्नलिखित शब्द युग्मों से पूर्ण पुनरुक्त, अपूर्ण पुनरुक्त, प्रतिध्वन्यात्मक और भिन्नार्थक शब्द- अलग-अलग कीजिए। सखी-सहेलियाँ, हँस-खेलकर, माँ-बहन, भोली-भाली, सात-आठ, सुख-सुहाग, हँसाती-हँसाती, भाई-बहन, समझाते-समझाते, रंग-बिरंगे घर-द्वार, इधर-उधर।

5. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए –**

निराशा, अपना, अन्याय, सुन्दर

योग्यता विस्तार :-

1. 'दहेज एक सामाजिक अभिशाप है।' दहेज पर केन्द्रित नाटक विद्यालय की बालसभा में अभिनीत कीजिए।
2. प्रस्तुत एकांकी को कहानी के रूप में लिखिए।
3. समाज में व्याप्त दहेज की दूषित प्रथा को दूर करने के लिए किसी समाचार-पत्र के सम्पादक के नाम एक पत्र लिखिए।
4. 'यदि आप प्रमोद होते तो जीवनलाल से किस प्रकार का व्यवहार करते ?' इस आधार पर अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

शब्दार्थ

समृद्धि - सम्पन्न, सामर्थ्य - शक्ति, ताकत, खातिरदारी - स्वागत सत्कार,
मरहम - एक प्रकार की दवा, उपक्रम - प्रयास, कुंजी - चाबी,